

DPN S825

Title : समाधि जोग SAMĀDHI JOGA

Run. No. 6516

Cat. No.

Micro. No.

Subject मन्त्र तन्त्रिक

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपालभाषा लिखेको
new direction

Size in cms. 19.5 x 7.5

Folios 14

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

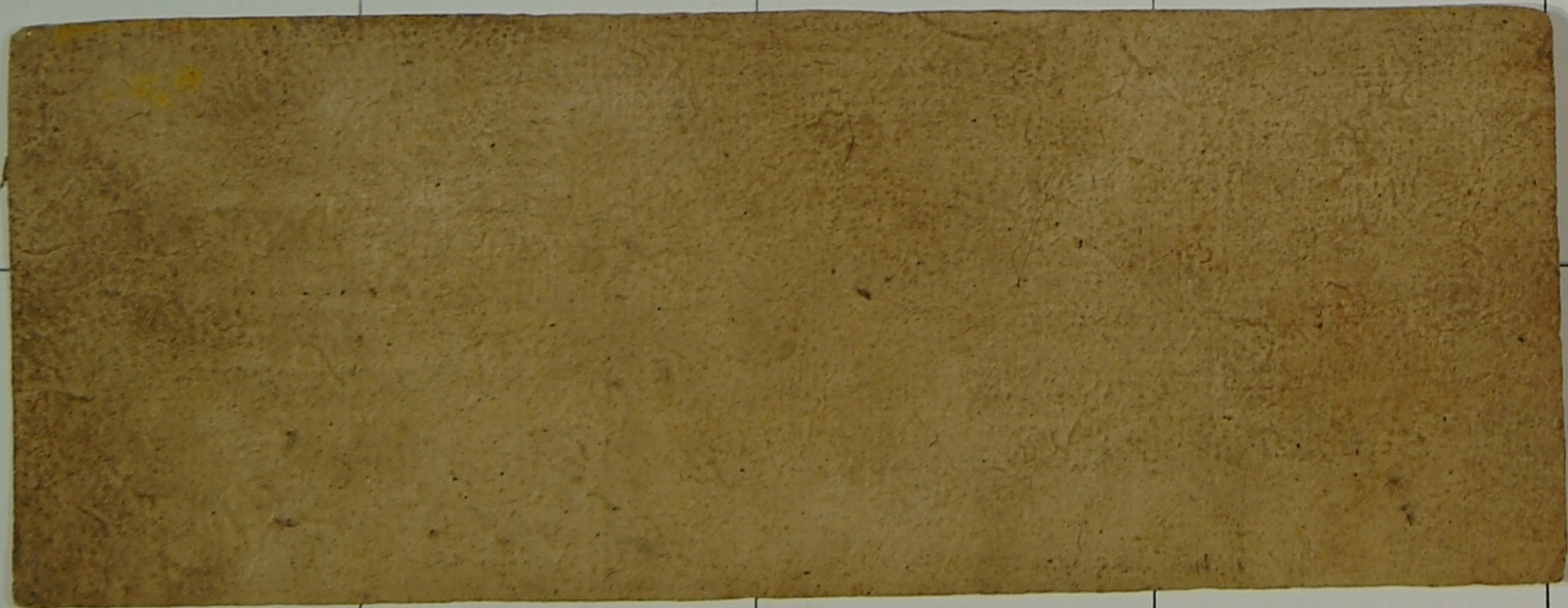
Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
ॐ नमः श्री ब्रह्मसाम्बाय ॥ ॐ आः ह्रीं श्रीमन् वज्रः सगुह्यं चण कमलाय. सिद्धशान्तिवद्
सन काम ॥

સમાપ્તિ / Colophon

શ્રી શ્રી સમાપ્તિ ગો સમાપ્તિ ॥



ॐ नमः श्रीवक्रसम्बज
 जः सनगुजवचनक
 सनकजाय ॥ नमो ह्रीं वी
 लयैः सङ्कययस्यस्यिन
 श्रीमन्वजुगकाया ॥ ज
 यनिस्यय २

यथा ॐ श्री ह्रीं श्रीमन्व
 मलोयः सैम्पहानावला
 दहवाधिसमगतीः सका
 : समायूसनसैरुवा ॥
 किनीचक्रवर्तिनी ॥ य

॥ १ ॥

कस्तान्तिकानायः जानायजगतीनमः ॥ यावकीवजुगकिन्यः किः
 नसंकल्यवेदनाः लोकाकिर्ययुवर्त्तिन्यः स्वावकीवजुगनमः सना ॥
 मटिनीकायिनः सैयनीरावेथन ॥ श्रीकालमइयैस्तानः हकाजहकुव
 र्जिनः नूकाजययनासार्थः ककाजैथकविस्तिन ॥ कवित्सर्वसङ्गहैना
 शुक्रवर्धद्विजसम्बनीमात्मानरावयन् ॥ ॥ लोहानस्वधनयाया

नदं नृक्ष कनक्ष भज ॥ दक्षिण हस्ते आकाशिन सूर्य मधुली ॥ उज्ज्वला हस्ते
 सूर्य मधुली दक्ष ॥ वाम हस्ते आकाशिन चंद्र मधुली ॥ खंडिता हस्ते
 सूर्य मधुली दक्ष ॥ यचिं नित्य ॥ ओं ह ३ नमो हि स्वा ॥ ईं वा षट् ईं ईं ईं हा ॥ २ ॥
 रुद्र रुद्र ईं ॥ यचिं यचिं दक्ष ॥ ओं वं हां थो की भां ईं की ईं ईं रुद्र ॥ सा हा
 र्पय मिं थो ईं वं काल यचिं थिय ॥ ओं ईं ३ स्वा हा ॥ वज ॥ ओं हां ३ स्वा हा ॥

यक्ष ॥ ओं वज्र सत्व सीमा हा ॥ वज्र जल म नृक्ष न वज्र धर्म गुण यिन वज्र क
 र्म कला हव ॥ यक्ष वा द न ॥ ओं आ ३ ट किं ईं ॥ ३ ॥ वज्र यूय की ॥ ओं रवं
 रक्षु भां ईं रुद्र ॥ ओं र वरक्षु भां सर्व विद्या नृक्ष न य ईं ॥ यक्ष ग स्व ध न ॥ ओं
 वज्र यूय स्वा हा ॥ ओं वज्र धूय स्वा हा ॥ ओं वज्र गरुध स्वा हा ॥ ओं वज्र नैवय स्वा
 हा ॥ ओं वज्र दीय स्वा हा ॥ ओं वज्र लो जाय स्वा हा ॥ यक्ष स्व न या य ॥ स्वा हा

15
10
किं लखसुखं वलिसुखं ॥ ओं अकालमूरवसर्वधर्मी नीमाय नूत्यन्तरी
ओं अ० हं रुद्र स्वाहा ॥ ओं अ० हं ॥ वलिसुखं ॥ ओं अ० हं ॥ मधुसूत अ
धीमान ॥ ओं हं नमस्ति स्वाहा ॥ याकस्वधन ॥ ओं हं ह्रीं श्रीं अरवे स्वाहा ॥ पून ॥ ३ ॥
याकस्वधन ॥ ओं पूनयिनासूत्यनीलावयन ॥ श्रीं कविनयप्रहरी जने मीका
जनमामकि कृष्णं दिगुजा वज्रवज्र हस्तं कथासंयुक्तयागनमाहात्म्य

5
नडविरुर्गयुक्थन ॥ पूनहं ह्रीं श्रीं अरवे स्वाहा ॥ विद्विष्य ॥ ओं सर्वलोककामि
नि सर्वलोकस्वधनी गुणवज्रतिकां रुद्रस्वजी सर्वदृष्ट्यापिन ओं स्वध
हं ॥ ओं अमर्त अमर्त युवसय हं ॥ यासयाय ॥ ओं पूं जीं ओं एं लोदं मों कां
ओं नै ॥ ऊं अने साहाय्यमिधिया ॥ कों कों लं वूं श्रीं पुं गुं स्वं सिं नं सिं मं वूं ॥ ख
ओनेधिया ॥ ओं विरं अयपिरं ॥ ऊं शाय ऊं शो ॥ ऊं डाय ऊं डो ॥ मं लाय कम

लो० यम्भम्भन उयम्भम्भन ॥ नमो जंग न्यास ॥ ओं हं नमहि स्वाहा ॥ ओं
वाँ वट् यई ईं रु ट् रु ट् स्वाहा ॥ ओं वै हो यां की भौं हें क्रीं ईं ईं रु ट् रु ट् स्वाहा
न जा कि मने ॥ ओं लु न मे ज ऊ ईं ॥ ओं था ग म च ऊ ईं ॥ ओं आ स्ता ने ज ऊ ईं ॥ न
न स्व ऊ द य अ का प्र ष व ड म दु ले य नि क्त ऊ ईं कारं आ का ज च ऊ ॥ ओं
का ज थु ईं रु ट् रु ट् कारां न ॥ श्री लि कालि य कि न य थु ऊ ज च ऊ क्त क्त

二 八 二

वर्धस्वार्थः ॥ नदङ्ग जयजिह्वः चक्रयमवधुवाकविष्ठुद्वि ॥ व
य्याङ्ग जयस्वार्थवेलावनः विज्ञानस्वार्थवज्रसूर्यः संज्ञानस्वार्थ
यमनेत्यस्वजः संज्ञानस्वार्थवज्रजाङ्गः विज्ञानस्वार्थवज्रसत्त्वः
॥ सर्वगन्धर्गगन्धीहं चक्रवर्जः चक्रधामाहवज्रिः रश्मिगन्धर्ववज्रः
नयनीव्यावज्रिः वक्रयाजागवज्रः स्पर्शमायासूर्यवज्रः ॥ यूपिचि

नमो आ कार भर्ज काप न सूर्य मधुर्ल. नमः खर्द काप न विष्णु वज्र. ईं
 का नाधि विरु. नड भिनाय वरु लेयु मां. वज्र कर्हि का जूय न ज
 रक्ष गति॥ चडामय हर्मि विरु वः मंद निवजिरु व. वज्र वीध व. वज्रः
 यं जल ईं य ईं. वज्र विना न ईं ख ईं. वज्र सुल जाल ईं ज स ईं. वज्र जाल
 न लो ख ईं. ईं का ज जाल दिग्वा का ज. समी कूय नि सिनी. वडादि

॥ ३ ॥

विष्णु हृदय कीलय ओं घ घ घा ट य २ सर्व ईं वान ईं ईं रुट्॥ ओं किलय
 २ सर्व पाय नय नय ईं रुट्॥ ओं वज्र मंगल वज्र किलय. वज्र धन आरु
 ययं गि॥ ओं सर्व विष्णु विनायका नी. काय वा क चिरु. वज्र न ज कीलय
 २ ईं ईं रुट्॥ ओं वज्र मंगल वज्र किलय. मा का ट य २ ईं ईं रुट्॥ ॥ मि नि विष्
 ल व ध न॥ न न स्व हृदय सु ४ ईं का ज ज स्मि हिन न नि वज्र वन ला क न रु. अः

नारयण ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं सु कू लारय ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं यम ठा कि नी य ह्रीं ह्रीं रु
 द्रा ॥ ओं यम इ नि य ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं यम इ वि स ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं यम थ नी य ह्रीं ह्रीं रु
 द्रा ॥ ओं च इ गु हा ला य ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं ग हा ला य स्वाहा ॥ ओं काली कू ला य स्वाहा ॥ ८ ॥
 ॥ ओं कलै क ह्रीं न वा य स्वाहा ॥ ओं मू रू क हा सा य स्वाहा ॥ ओं लो क्ति व न रु नाः
 स नी य स्वाहा ॥ ओं धा जी ध का रा य स्वाहा ॥ ओं किलि किलाल वा य स्वाहा ॥

॥ य च य ह न य ज्ञा ॥ अशला स्या ॥ घट्ट वा द न ॥ मु नि ॥ सर्व ह् स न सी
 दा ह् ॥ जग द र्थ य सा द कं ॥ चि त्त म धि वि वा ह् नं श्री स न्च र्जन मा सु नं ॥ व्या
 धि न वि भ्व म हा रु नं ॥ स र्वा ल धी स दा हि नं ॥ क र्पा क्ता रु म हा नू दं ॥ श्री स
 न्च र्जन मा मि ह् ॥ ॥ क र्प धा ॥ ओं नं मा रु ग व न वि र्जी वी वि भ्व जा
 य ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं म हा क ल्या ग्ति स त्रि रा य ह्रीं ह्रीं रुद्रा ॥ ओं ज टा म कू ट र्क

यवायईरुट् ॥ ॐ इवा कला लाय ही घन मखायईरुट् ॥ ॐ यजस्तुपास ॥ ॐ
 उप ॥ खदी गध नायईरुट् ॥ ॐ वा पुवर्म वरध नायईरुट् ॥ ॐ महाधूर्माधक
 नाय वयूरवायईरुट् ॥ ॥ ॐ निममानथाग ॥ नमो वायदसना ॥ क
 कालिनमनूमादिन ॥ मघमखिलनीहिनदायानो ॥ युनिदसयामि ॥ य
 नयूनययई ॥ सम्वर्णविद्युधभवकरवप्रजिनो नम ॥ जिनकुलासैरुनानि

॥ ५ ॥

कस्तनानिअनूमादिनानि ॥ वारुधसम्यकयजिधमयामि ॥ जिनयलानि
 जिकुर्य ॥ सपदीथागनास्मि ॥ सर्वरुधनवारुधेचिर्दुविदरुध ॥ अनूकन
 याग्नरुधमसवमि ॥ ॥ ॐ निममानथाग ॥ नमो नमो कनूनायका ॥ चकुव
 अविहानैरावधन ॥ ॐ स्वरावधुडासर्वधर्मानोस्वरावधुडाई
 अन्यनीरुनवधुस्वरावात्मकाई ॥ अरुधक ॥ ॐ सर्ववीजयागिनी

यथा हि जानमाहि न स्नायीना सर्वतथगतः स्रथमहं स्नाययिष्यामि शुद्धं
 दिव्यं नवात्रिंशोऽं आ ३३ सर्वतथगतः अहिष्यक समश्चिदं ॥ यनमः
 कूनाहिष्यक ॥ अहिष्यकं महावज्रं कुरु कुरु नमस्तुते यथा कंयूनाथ
 यमकूटयं कुरु लोहव ॥ सर्ववृद्धकृणामहि महामकूटा क्रीषदं ॥ ओं वज्र
 क्षणं नमः अहिष्यक ॥ ओं वज्रवज्रिणि अहीषिक ॥ ओं नलवज्री अही

॥ १० ॥

विचरं ॥ ओं धर्मवज्रि अहीषिक ॥ ओं कर्मवज्रि अहीषिक ॥
 अयाहिषिकत्वमसि वृद्धः वज्राहिष्यक ॥ ४४ दं न सर्ववृद्धत्वंगः
 कुरु वज्रसूति यन ॥ वज्राधीयति स्वामहोषिकमिति वज्रसम
 यस्तत्त्वहा वज्रघंष्ट्र अ ॥ वज्रसत्त्वमिति विचामि वज्रनामाहि
 ष्यक ॥ श्रीहनुक वज्रनाम तथगतं सर्ववृद्धस्व ॥ वज्रनमस्तुते

सिद्धलैलिकाडि धमनीनिय ॥ ॥ धनयूष्यन्यास ॥ ॐ वज्रवेपाचाना
 यस्वाहा ॥ ॐ अऊँ ल्यायस्वाहा ॥ ॐ जलसंस्तुवायस्वाहा ॥ ॐ अमृतांलय
 स्वाहा ॥ ॐ अमाघसिद्धिस्वाहा ॥ ॐ मामाकियस्वाहा ॥ ॐ प्रावनियस्वाहा ॥ ११ ॥
 ॥ ॐ यमनियस्वाहा ॥ ॐ नाजायवज्रपूर्य्यपुनिरुस्वाहा ॥ ॥ यथा
 यवानयुजा ॥ लाब्ध ॥ घट्ट वादना ॥ तुमि ॥ नर्यदा ॥ छुनिमकुनाही

व्यक ॥ ॥ धनयूर्ववन ॥ आधीर्य्यलौघरु ॥ नर्यदा ॥ धनजायः
 याय ॥ ॥ छुनिजायजोग ॥ यूर्ववन ॥ आधीर्य्यलौघरु ॥ नः
 र्यन ॥ छुनिजुर्जोग ॥ ॥ धनवलिसलैखनय ॥ ॐ कीं आवम
 नपुनिरुस्वाहा ॥ वलिसलैखन ॥ नारायैकांजितवायूमधुर्लजः
 काजल अग्निमधुर्ल अजनीनमधुखिरथा वृषिकोपप्रियमरु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 जज्ञात् यत्तन्मृगयन् यदि यन्निष्पाद्य ॥ यवतममुलं वलयं निष्पादितं
 नायं च नीलमात्मजगदिदं ॥ अक्षीनवर्णं लानवर्णं उमन्मयं दद्यात् ॥ १२ ॥
 निहं काजज्ञानिनं विनक्ति ॥ माज्ञानं निष्पाद्य मयः शुक्रं खड्गं
 गन्तव्यं विलिखेत् यात्रासुदंशं निषयन् ॥ सीति हर्षं विचिन्तयन् ॥ १३ ॥

इयं विडो अष्टादशं भुजं जगत्तदद्यात् ॥ नदं निनादसदिग्वर्णं वर्णितं
 म्या ॥ वीजं वीजं वीजं ॥ हानामृगं मान्नीयं ॥ नृवं वाजं नृवं वीजं विचिन्तयन्
 यत् ॥ ३ ॥ अष्टादशं ॥ वलि अक्षिपान् ॥ ॥ वलि अक्षिपान् ॥ पूर्व
 म् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 चन्द्रसूर्यकजद्वयं गन्तव्यं कालं दद्यात् ॥ अत्याभ्यासं गन्तव्यं सर्वं

[illegible][illegible]

॥ ४३ ॥ अथ सप्तमः अध्यायः ॥ ॥ ११४ ॥